आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:25-09-14

सारे विश्व की आत्माओं को ईश्वरीय ज्ञान की रोशनी देने के निमित बनाने वाले ज्ञान सूर्य बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम हो धरती के चैतन्य ज्ञान सितारे, तुम्हें सारे विश्व में ईश्वरीय ज्ञान की रोशनी फैलानी है.

आज भी मनुष्यों भक्ति मार्ग में स्थूल सूर्य, चन्द्र और सितारों की पूजा करते रहते है. बाबा ने इसका राज समझाते हुए कहा है की असूल में शिवबाबा है ज्ञान-सूर्य, ब्रह्मा बाबा है ज्ञान-चन्द्र और हम बच्चे है ज्ञान सितारे. उनके अभी के कर्तव्य के आधार से ही भक्ति मार्ग में मनुष्य स्थूल सूर्य, चांद और सितारों की महिमा करते हैं. सूर्य और चांद की महिमा तो सब करते है लेकिन सितारों में फिर नम्बरवार है - पुखराज-परी, नीलम-परी....

आज की मुरली से हम पॉइन्टस निकाल कर तीन मुख्य बातों का अभ्यास करेंगे. १. आत्म-अभिमानी बनने का २. आत्मा समझकर परमात्मा को याद करने का ३. सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त को याद करने का या कहे स्वदर्शन चक्र फिराने का.

१. आत्म-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस के लिए --

बाबा ने कहा,

- मैं तुम आत्माओं का बाप हूँ. पढ़ती भी आत्मा है.

- आत्मा को आत्मा कहा जाता है. बाकी शरीरों के अनेक नाम हैं.

- इस बेहद के ड्रामा में पार्टधारी आत्मायें हैं. आत्मा ही पार्ट बजाती हैं. यहॉ बैठ बाप भी आत्माओं को देखते हैं. कितनी छोटी सी आत्मा हैं.

- आत्मा कहॉ रहती है? कहेंगे हम अपने घर परमधाम में रहने वाले हैं फिर हम यहॉ आते हैं बेहद का पार्ट बजाने.

- एक तो अपने को आत्मा समझो. मूल बात ही यह है.

२. आत्मिक स्थिति में रहकर परमात्मा को याद करो --

बाबा ने कहा,

- तुम बच्चे (आत्माये) जानते हो तुमको पढ़ाने वाला इनकारपोरियल शिवबाबा है. उनको अपना शरीर नहीं है. कहते हैं मैं इस रथ का लोन लेता हूँ.

- यह तो एक ही बाप, टीचर, सतगुरु है.

- बाप तो सदैव परमधाम में ही रहते हैं. वह पुनर्जन्म में नहीं आते हैं.

- अभी बाप तुम बच्चों को अमरकथा सुना रहे हैं.

- भगवानुवाच - मनमनाभव (स्वयं को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो)

- इस मुख द्वारा तुम बच्चों को ज्ञान दूध पिलाता हूँ तो तुम्हारे जो पाप हैं वह सब भस्म होकर तुम्हारी आत्मा कंचन बनती है.

- तुम्हारी आत्मा में जो खाद पड़ी है वह निकले कैसे? इसके लिए याद की यात्रा हैं.

- कहा भी जावो एक-दो को सावधान करो - मनमनाभव. शिवबाबा याद है? एक-दो को यही इशारा देना हैं. तुम बाप को याद करते रहो तो आत्मा एकदम पवित्र हो जायेंगी.

३. सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त को याद करो. -

बाबा ने कहा,

- अभी तुमको रचता बाप, अपना और रचना का सार सुनाते हैं. तुमको कहते है स्वदर्शन चक्रधारी बच्चे.

- यह भी तुम जानते हो. शूद्र थे तो भी मनुष्य ही थे, अभी ब्राह्मण बने हैं तो भी मनुष्य ही हैं फिर देवता बनेंगे तो भी मनुष्य ही रहेंगे. परन्तु कैरेक्टर बदलते जाते हैं.

- तुम भी हो मनुष्य. परन्तु तुम्हारी आत्माको बाप पवित्र बनाये विश्व का मालिक बनाते हैं. कितनी ताकत बाप वर्से में देते हैं. ऑलमाइटी बाप है ना.

- अभी तुम्हारी आत्मा प्योर कंचन बन जाती हैं तो फिर सतयुग में तुम्हें काया भी कंचन मिलती हैं. फिर आहिस्ते-आहिस्ते सीढ़ी उतरते हैं.

- यह पढ़ाई ही सोर्स ऑफ इनकम है. जिससे सारा आसमान, धरती आदि सब हमारे हो जाते हैं. उसको कहा जाता है अडोल राज्य. कोई भी खण्डन कर न सके. कोई जला न सके.

- तुम जानते हो बाप हमको अमरकथा सुना रहे है अमरलोक के लिए. अब तुम मीठे-मीठे बच्चों को ऊपर से लेकर सारा चक्र बुद्धि में है.

इस तरह से मुरली में से तीनों बातों पर पॉइन्टस निकाल कर, उसकी प्रैक्टिस करने से हमारी स्थिति आत्मा-अभिमानी बनती जायेंगी और हमारी आत्मा को बाप और वर्से की याद भी सहज रहेंगी. ॐ शांति.